रंगभारती

मई, 1981

रंगकर्मियों से निवेदन

- कोई भी संघर्षशील पत्रिका केवल राज्याश्रय अथवा बड़े औद्योगिक घरानों के सहारे कभी नहीं चली।
- कोई भी सोद्देश्य पत्रिका राज्याश्रय के अभाव में लड़खड़ा सकती है, लेकिन मर नहीं सकती।
- 'रंगभारती' आपकी अपनी पत्रिका है। इसे आपका संरक्षण चाहिये।

हमारा सभी रंगकर्मियों से निवेदन है कि मात्र बारह रुपये आज ही भेजकर जुलाई, १९... से 'रंगभारती' के वार्षिक ग्राहक बन जायें।

- समस्त ... योग-राशि बारह रुपये ... प्रदान करें।
- रंगम... आपकी रचनायें भी ...
- वार्षि... नक्षत्र अंतर्राष्ट्रीय, चौक... ।

विनीत
डॉ० अज्ञात
संपादक

...ष्ठतम नाटक

...ऊ-226003

क्रुपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

रंगकर्मियों से निवेदन

- कोई भी संघर्षशील पत्रिका केवल राज्याश्रय अथवा बड़े औद्योगिक घरानों के सहारे कभी नहीं चली।
- कोई भी सोद्देश्य पत्रिका राज्याश्रय के अभाव में लड़खड़ा सकती है, लेकिन मर नहीं सकती।
- 'रंगभारती' आपकी अपनी पत्रिका है। इसे आपका संरक्षण चाहिये।

हमारा सभी रंगकर्मियों से निवेदन है कि मात्र बारह रुपये आज ही भेजकर जुलाई, १९[...] अंक से 'रंगभारती' के वार्षिक ग्राहक बन जायें।

- समस्त [...] योग-राशि बारह रुपये [...] प्रदान करें।
- रंगभ[...] आपकी रचनायें भी [...]
- वार्षि[...] नक्षत्र अंतर्राष्ट्रीय, चौक[...]ें।

विनीत
डॉ० अज्ञात
संपादक

[...]ष्ठतम नाटक

[...]ऊ-226003

वर्ष 8 अंक 11
मई, 1981
रंगमंच की प्रतिनिधि पत्रिका

रंगभारती

क्या इस मास आपका वार्षिक सदस्यता-शुल्क समाप्त हो रहा है ?

यदि हाँ, तो कृपया शुल्क भेजकर नवीनीकरण करायें !

शुल्क प्रधान कार्यालय के पते पर भेजें ।

संपादक : डॉ० अज्ञात

प्रधान कार्यालय :

रंगभारती, कोठी साहू जी, मिर्जामण्डी, चौक, लखनऊ-226003

कानपुर कार्यालय :

छायालोक, 111-ए/183, अशोक नगर, कानपुर 208012

इलाहाबाद कार्यालय :

153-ए, अमृत बाग, सुलेम सराय, इलाहाबाद-211001

यह अंक : रु० 1-50 वार्षिक : 12-00 रुपये

राजस्थान शासन द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लिये मान्यता प्राप्त पत्रिका

रंगभारती

इस अंक में

पत्रकारों के लिए कल्याण कोष

प्रदेश शासन द्वारा तीन लाख रुपये का अंशदान

- मृत पत्रकारों की विधवाओं, माता-पिता, 28 वर्ष से कम उम्र के बेरोजगार पुत्र, अविवाहित और बेरोजगार पुत्रियों के लिए प्रदेश सरकार की नयी व्यवस्था।
- एक मुश्त सहायता की धनराशि 5,000 रु० जो 250 से 400 रुपये की मासिक किश्तों में भी देय।
- मासिक सहायता कम से कम 10 वर्ष तक पत्रकारिता क्षेत्र में रहने वाले ऐसे पत्रकारों को दी जायगी जिन्होंने कल्याणकोष में 5 वर्ष तक अंशदान किया हो।
- पत्रकार कल्याण कोष का सृजन सरकार द्वारा प्रदत्त अंशदान समाचार पत्रों के प्रबन्धकों तथा उ० प्र० श्रमजीवी पत्रकारों से प्राप्त अंशदान से होगा।
- समाचार पत्रों के प्रबन्धक मंडल के अंशदान की धनराशि का आधार पत्रों की विभिन्न श्रेणियां। अधिकतम धनराशि 10,000 रु० और न्यूनतम 200 रुपये।
- श्रमजीवी पत्रकार द्वारा कम से कम एक दिन के वेतन के बराबर वार्षिक अंशदान।

श्रमजीवी पत्रकारों के कल्याण के लिए उत्तर प्रदेश शासन की

विनम्र भेंट

गुजराती नाटक 'अग्निज्वाल' की दूसरी किश्त

सोनाली

मूल आलेख : प्राग जी डीसा

रूपान्तर : डा० शरद नागर

दूसरा अंक

स्थान : प्रथम अंक के दृश्य के समान।
समय : सवेरे के छः बजे।

(रूपेश, वंदना और चाचा बैठे हैं। पुलिस इन्सपेक्टर सोहन अपनी ड्यूटी में बयान नोट कर रहा है। बहुतेरे सवाल पूछ चुका है—बयान जारी है।)

सोहन : डॉ० मेहता, यह बताइये कि डॉ० ध्रुव कल रात कितने बजे आपके घर आये थे?

रूपेश : यही कोई साढ़े आठ बजे।

सोहन : डॉ० मेहता। हॉस्पिटल से मुझे पता चला कि डॉ० ध्रुव पिछले पन्द्रह साल से साईकेट्रीस्ट एक्सपर्ट की पोस्ट पर काम कर रहे थे।

रूपेश : राइट।

सोहन : आप कितने साल से हॉस्पिटल में काम कर रहे हैं?

रूपेश : दस साल से।

सोहन : इट मीन्स कि डॉ० ध्रुव आपसे सीनियर थे।

रूपेश : मुझसे सीनियर नहीं, बल्कि यों कहिये कि मुझसे ज्यादा वक्त से वह हॉस्पिटल में काम कर रहे थे।

सोहन : और पुलिस को आपने जो स्टेटमेन्ट दिया है उससे ऐसा लगता है कि डीन की पोस्ट के लिये आप रास्ते से हट जायें, ये समझाने के लिए ही डॉ० ध्रुव आपके पास आये थे। वेल, एक सीनियर माना जाने वाला डॉक्टर...

रूपेश : में आई करेक्ट यू ? —वो मेरे सीनियर नहीं थे।

सोहन : डोन्ट लूज योर टेम्पर, डॉक्टर मेहता···हास्पिटल में सभी उन्हें सीनियर —या टु पुट इट मोर क्लीयर्ली—एक बुजुर्ग डॉक्टर मानते थे, इज्जत करते थे। एक ऐसा बुजुर्ग आपके घर कुछ याचना करने आये—आपको कुछ अजीव-सा नहीं लगता ?

रूपेश : नॉट ऐट आल। जब कोई खास मामला सामने होता है तो क्या बड़े देश के प्रमुख छोटे देशों के प्रमुखों से मुलाकात नहीं करते ? ऐसे मामलों में छोटे मामलों का सवाल नहीं उठता। स्वतन्त्र रूप से हरेक व्यक्ति अपने अपने क्षेत्र में महान होता है—बड़ा होता है।

सोहन : दैट्स ए गुड आंसर। वेल, लेट अस प्रोसीड—डॉ० ध्रुव जब आपके यहाँ आये थे तो उन्होंने किसी तकलीफ या बीमारी की शिकायत आपसे की थी ?

रूपेश : जी नहीं।

सोहन : क्या आपको कुछ बीमार से नजर आये थे ?

रूपेश : जी नहीं।

सोहन : तो डॉ० मेहता क्या आप ठीक-ठीक बता सकते हैं कि डॉ० ध्रुव कितनी देर—आई मीन कितने मिनट या कितने घंटे आपके यहाँ रुके थे ?

रूपेश : यही कोई १०-१२ मिनट।

सोहन : और उस वक्त आपकी पत्नी और चाचा जी एयरोड्रोम गये हुए थे ?

रूपेश : जी हाँ।

सोहन : घर में कोई और था ?

रूपेश : जी नहीं। कोई नहीं।

सोहन : याद कीजिए, शायद कोई आया हो।

रूपेश : हाँ। डॉ० कौशिक आये थे। लेकिन जैसे ही कौशिक गया, डॉ० ध्रुव आ गये।

सोहन : घर में कोई नौकर-चाकर ?

रूपेश : कोई नहीं था।

सोहन : (वन्दना से) मिसेज मेहता माफ कीजियेगा, आपसे एक सवाल पूछता हूँ —घर का सारा काम आप खुद करतीं हैं ?

वंदना : नहीं—एक आया सुवह-शाम आती है और काम करके चली जाती है ।

सोहन : किस टाइम ?

वंदना : सुवह ८ से १२ तक और शाम को चार से आठ वजे तक ।

सोहन : (रूपेश से) तो डॉ० मेहता, जव डॉ० ध्रुव आपके यहाँ आये थे, उस वक्त आया घर में नहीं थी ?

रूपेश : जी नहीं ।

सोहन : आई सी ! (कुछ रुककर वन्दना से) मिसेज मेहता आप जब एयरोड्रोम के लिए रवाना होने के लिए निकली थीं तब क्या समय रहा होगा ?

वंदना : रात के सवा आठ वजे थे । क्योंकि हमें नौ से पहले ही एयरोड्रोम पहुँचना था ।

सोहन : उस वक्त घर में आया थी ।

वंदना : जी नहीं, वह आठ दिन की छुट्टी लेकर गई है ।

सोहन : ओह ! तो आप एयरोड्रोम से वापस कितने वजे लौटीं ?

वंदना : रात काफी देर गये—करीव साढ़े वारह वजे होंगे—क्योंकि प्लेन साढ़े नौ वजे की जगह पौने वारह वजे आया था ।

सोहन : नैचुरली—उस उक्त आपके पति के अलावा घर में और कोई नहीं होगा ?

वंदना : जी नही ।

सोहन : (चाचा की ओर मुड़कर) अच्छा चाचा जी, अब आपकी वारी है—एक्सक्यूज मी—अगर मैं आपको चाचा जी ही कहूँ तो आपको कोई एत-राज तो नही हैं ।

चाचा : शेक्सपीयर कह गया है—'गुलाव को चाहे जिस नाम से पुकारो । वो रहेगा गुलाव ही ।' उसी तरह हम करसनदास को चाचा, मामा, फूफा काका या काका कौआ जो जी में आये सो कहो वहरहाल मैं जो हूँ वही रहूँगा ।

सोहन : तो चाचा जी'''

चाचा : जरा रुकिए। चाचा भले कहिए, लेकिन ये 'जी--जा--' वगैरा प्रत्यय लगाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि ससुराल पक्ष के वर का जो चाचा होता है उसे सब चाचा कहते हैं।

सोहन : तो मैं आपको मिस्टर करसनदास कहूँगा।

चाचा : मिस्टर की क्या ज़रूरत है—जब मैं विधुर हूँ।

सोहन : वेल, तो फिर करसन भाई, आप कभी डॉ॰ ध्रुव से मिले थे ?

चाचा : हाँ, लेकिन इस बात को काफी समय हो गया है। महिला मण्डल ने एक विचार गोष्ठी का आयोजन बहुत साल पहले किया था—गोष्ठी का विषय था—'डॉक्टरों को शादी करनी चाहिए या नहीं ?' तब मैं भी सुनने गया था। डॉ॰ ध्रुव वहाँ एक वक्ता थे। सभा समाप्त होने पर रूपेश ने उनसे मेरा परिचय कराया था।

सोहन : उस वक्त आप पर क्या इम्प्रेशन पड़ा था ?

चाचा : आं...डॉ॰ ध्रुव को शायद यह लगा कि ये करसनदास भी कोई ऊँची चीज है ?

सोहन : मेरे कहने का मतलब है कि डॉ॰ ध्रुव आपको कैसे आदमी लगे ? बहुत से लोगों का चेहरा देखकर यह अन्दाज़ा लग जाता है कि वो आदमी नरम मिजाज का है या गरम मिजाज का ?

चाचा : डॉ॰ ध्रुव मुझे तो बीच के लगे। भूगोल में...क्या कहते हैं...हाँ—समशीतोष्ण।

सोहन : अच्छा, तो जब आप लौटकर आये उस वक्त तक डॉ॰ मेहता तो सो गये होंगे—और आपकी कोई बात नहीं हो पायी होगी ?

चाचा : ये सो गया था या जग रहा था, ये तो इसकी बीवी जाने—बाकी मेरी और उसकी कोई बातचीत नहीं हुई।

फोन की घंटी बजती है। वंदना रिसीवर उठाती है।

वंदना : हल्लो।

सोनाली : (माइक में आवाज) आप कौन ?

वंदना : मैं वन्दना। कहिए क्या काम हैं ?

सोनाली : प्लीज डॉ० मेहता को फोन दीजिये ?

वंदना : आप कौन हैं ?

सोनाली : कौन मैं ?⋯जी मैं उनकी पेशेन्ट हूँ ।

वंदना : आपका नाम ?

सोनाली : मेरा नाम ? अँ⋯रुपाली ।

वंदना : डॉक्टर, आपका फोन है ।

रूपेश : कौन है ?

वंदना : आपकी कोई पेशेन्ट है—रुपाली !

रूपेश : रुपाली ? हाँ-हाँ—रुपाली (फोन लेकर) डॉ० मेहता स्पीकिंग ।

सोनाली : हल्लो ओल्ड ब्वाय—हाऊ आर यू !

रूपेश : आपको क्या तकलीफ है ?

सोनाली : तकलीफ ! मैं भी यही पूछती हूं कि कहीं तकलीफ में तो नहीं पड़ गये ?

रूपेश : वेल ! मुझे लगता है आपको फिर हाई ब्लडप्रेशर हो गया है । ऐसा करिये अभी आप ऐसीड्रेक्स की एक गोली ले लीजिए और फिर शाम को कंसल्टिंग रूम में मिलिए ।

सोनाली : नहीं डॉक्टर—इसके बदले शाम ६ बजे तुम मुझसे ग्रान्ड कैफे में मिलो ।

रूपेश : नहीं । यह मुमकिन नहीं है । आई हैव अदर ऐंगेजमेन्ट्स ।

सोनाली : ऐंगेजमेन्ट्स—गोली मारो उन्हें । ⋯तुम अगर ठीक छः बजे ग्रान्ड कैफे में नहीं मिले तो तो फिर मैं खुद ही तुम्हारे यहाँ चली आऊँगी ।

रूपेश : सुनिये, घर पर मैं कोई पेशेन्ट नहीं देखता ।

सोनाली : मैं यूँ ही 'कोई' नहीं हूँ मुझे बहुत अर्जेन्ट काम है । डॉ० ध्रुव जो राम को प्यारे हो गये हैं, उनके बारे में ही एक सेंसेशनल न्यूज है । तुम अगर नहीं आये तो चक्कर में पड़ जाओगे । ध्यान रहे !

रूपेश : आल राइट । मैं विजिट पर आकर ही आपको देख लूंगा ।

सोनाली : वेल डॉक्टर, सी यू ऐट सिक्स ओ क्लॉक ऐट ग्रान्ड कैफे ! बॉय-बॉय डार्लिंग एंड गुड लक !

फोन पर रिसीवर रख देता है ।

वंदना : ये रुपाली कौन है ।

रूपेश : एक पेशेन्ट। साइक्रोन्यूरोसिस का केस है। वेल इन्सपेक्टर कुछ और पूछना है ?

सोहन : लगता है, आप विजिट पर जाने की जल्दी में हैं ?

रूपेश : नहीं विजिट पर नहीं, लेकिन हास्पिटल जाना हैं।

सोहन : तो मैं आपको देर नहीं होने दूंगा। अगर इजाजत हो तो सिर्फ एक सवाल और डॉ० मेहता—डॉ० ध्रुव जैसे हॉस्पिटल के एक बड़े स्पेशलिस्ट जब आपके पास आये तब आपने ड्रिंक्स तो ऑफर किये ही होंगे—चाय, काफी, या कोल्ड ड्रिंक्स वगैरह।

रूपेश : जी हाँ मैंने शरबत या बीयर ऑफर किया था।

सोहन : फिर ?

रूपेश : लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

सोहन : ये कैसे मुमकिन है ? हमने आपके ड्राइंगरूम का जब मुआयना किया था तो शरबत के गिलास इसी टेबुल पर पड़े थे।

रूपेश : दो गिलास न ? हाँ, वो तो मैंने और कौशिक ने शरबत पिया था।

सोहन : आई सी। वेल डॉ० मेहता—शरबत के गिलास और उनके कन्टेन्ट्स एनालिसिस के लिए केमिकल एक्जामिनर को भेज दिए गए हैं इसकी रिपोर्ट शाम तक मिल जायेगी। आलराइट डॉ० मेहता, थैंक्स फॉर योर कोऑपरेशन एण्ड यू टू मिसेज मेहता।

चाचा : और मुझे ?

सोहन : आपको भी। लेकिन करसनदास भाई मैं चाहता हूँ कि मुझे आपको फिर न हैरान करना पड़े ''' गुड बाय !

लाइट्स फेडआउट। फिर नेट कर्टेन के पीछे ग्रैन्ड कैफे का दृश्य दीखता है। जाज म्यूजिक बज रहा है—कोई स्त्री पाश्चात्य गीत गा रही है—सोनाली एक टेबुल के पास बैठी है। रूपेश आता है।

रूपेश : क्या है सोनाली। तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया ?

सोनाली : तुम हॉस्पिटल के डीन बनोगे, उसके लिए कांग्रेच्युलेशन्स देने के लिये और सेलीब्रेट करने के लिए।

रूपेश : किसने कहा कि मैं डीन बनूगा ?

सोनाली : अरे वाह, डॉक्टर ध्रुव बैकुन्ठवासी हो गये—अब तुम्हारा ही तो नम्बर लगेगा।

रूपेश : कुछ कहा नहीं जा सकता। डॉ० ध्रुव मेरे घर आये और उसके बाद जो घटनायें घट चुकी हैं उनको देखते हुए कहा नहीं जा सकता कि कमेटी का क्या रुख रहेगा।

सोनाली : हाँ, डॉ० ध्रुव ने मरने में जरा उतावली कर डाली। अपने घर पहुँचकर लम्बे हो जाते तो ये मुसीबतें न आतीं।

रूपेश : वो कैसे ?

सोनाली : शरबत में डोज कुछ ज्यादा पड़ गयी थी।

रूपेश : तुमने डाला था ?

सोनाली : तो भला और कौन डालता ? तुम्हारा रास्ता साफ हो जाए—यही सोच-कर मैंने ये साहस किया। लुक हाऊ आई लव यू डार्लिंग !

रूपेश : मजाक छोड़ो। तुमने सिर्फ इसीलिये ये जघन्य काम किया।

सोनाली : वाह राज्जा। तुम्हारी इच्छा पूरी हो, इसलिए हमने तुम्हारी मदद की उसके बदले में तुम उल्टे मुझी को भला-बुरा कह रहे हो ?

रूपेश : तो क्या मैंने ये कहा था कि इसके लिये डॉ० ध्रुव की जान ले लो।

सोनाली : यह सच है कि तुमने नहीं कहा था—लेकिन मेरे जैसी बुद्धिशाली तो सब कुछ समझ सकती हैं न !

रूपेश : आदमी की जान लेने वाला कातिलाना जहर तुम साथ लेकर घूमती हो ?

सोनाली : नहीं मैं डॉ० ध्रुव के लिए नहीं लाई थी—मैं तो तुम्हारे परमपूज्य चाचा जी के लिए लाई थी।

रूपेश : चाचा जी के लिए ? तो क्या तुम्हारा इरादा मेरे चाचा जी की जान लेने का था ?

सोनाली : हाँ, डीन की जगह न मिले तो अपना हॉस्पिटल खुद बनवा सको और

उसके डीन वन सको। चाचा जी के पास तो अनगढ़ पैसा है और उनके इकलौते वारिस तुम हो। इट इज सो सिंपल।

रूपेश : ओह यू डेविल !

सोनाली : डेविल कहो चाहे डार्लिंग कहो लेकिन डॉ० ध्रुव तुम्हारे यहाँ खुद आये और मुझे लगा कि यमराज ने डॉ० ध्रुव को तुम्हारे यहाँ भेज दिया है। मेरे दिल की आवाज ने कहा कि सोनाली डॉ० मेहता के रास्ते का कांटा दूर कर—तू इसका काम कर, वह तेरा काम करेगा।

रूपेश : काम ? कैसा काम।

सोनाली : वाह मेरे राजा, भूल गये ? उस रात हम दोनों ने एक करार किया था कि मैं तुम्हें डीन बनने में मदद करूंगी और तुम मेरा काम करोगे।

रूपेश : कौन-सा कान ?

सोनाली. वादा पूरा करोगे न ?

रूपेश : करना क्या होगा ?

सोनाली : जीव के बदले जीव।

रूपेश : (चौंककर) कैसे ?

सोनाली : ऐसे कि तुम्हें किसी का खून करना है।

रूपेश : सोनाली !

रूपेश खड़ा हो जाता है।

सोनाली : बैठ जाओ डॉ०, सिट डाउन। अगर जाने की कोशिश की तो इसी कैफे में मैं तुम्हारी फजीहत कर डालूंगी कि मुझे फुसलाकर मेरे साथ व्यभिचार करने के लिए मुझे जबरदस्ती इस कैफे के फैमिली रूम में लाये हो। एक तो तुम्हारे ऊपर खून का जुर्म है ही, अब तुम्हारी आबरू की धज्जियाँ भी उड़ जायेंगी।

रूपेश बैठ जाता है।

रूपेश : मतलब यह कि मुझे किसी का खून करना है ?

सोनाली : हाँ ! तुम डॉक्टर लोग तो न जाने ऐसे कितने ही खून करते होगे।

रूपेश : हम खून करते हैं ?

सोनाली : हाँ मरीज अगर तुम्हारी लापरवाही से मर गया तो कहोगे, उसकी आयु

पूरी हो गयी और अगर ठीक हो गया तो उसे लूटोगे। सच तो यह है कि मरीज के मरने पर तुमको न नहाना पड़ता है और न इस बात की फिक्र होती है।' इसलिये डॉ० रूपेश मेहता, तुम अब इस काम के लिये तैयार हो जाओ।

रूपेश : कौन है वह बदनसीब, जिसके खून की प्यासी हो?

सोनाली : तुम्हारा मित्र डॉ० कौशिक।

रूपेश : कौशिक? ···उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

सोनाली : मेरी जिन्दगी के साथ उसने जो खिलवाड़ किया है—मैं उसके बदले में उसकी जिन्दगी से खेलना चाहती हूँ।

रूपेश : कैसा खेल?

सोनाली : सुनना चाहते हो? मेरी कहानी सुनकर तुम्हारे दिल में इस नराधम के लिए घृणा जाग उठेगी। दो साल पहले मैं ऊटी गई थी। एक शाम मैं घूमने के लिए निकली तो एक नौसिखिया साईकिल सवार छोकरे ने मेरे पैर के ऊपर साइकिल चढ़ा दी और पैर जख्मी हो गया। कौशिक उधर से गुजर रहा था, मेरे पास आया और बोला, 'मैं डॉक्टर हूँ' और मुझे फर्स्ट एड दी। दूसरे दिन···

अन्धकार—फिर नेट कर्टेन के दूसरी तरफ के पैनल में एक कमरे का दृश्य। दरवाजा खट-खटाने की आवाज, सोनाली लंगड़ाते हुए आती है और दरवाजा खोलती है। कौशिक प्रवेश करता है।

कौशिक : हाऊ इज माई लिटिल स्वीट पेशेन्ट?

सोनाली : इंप्रूविंग। वेरी काइन्ड ऑफ यू डॉक्टर। आप लोग मरीज़ों का कितना ख्याल रखते हैं!

कौशिक : इट इज अवर ड्यूटी। देखूं तो आपका पैर कैसा है?

सोनाली अपना जख्मी पैर दिखाती है।
कौशिक उसके पैर को सहलाता है।

दैट्स बेटर। पर मेरा ख्याल है कि ठीक होने में अभी इसे पन्द्रह दिन लग जायेंगे।

सोनाली : पन्द्रह दिन ? ओह नो डॉक्टर ! मैं तो चार ही दिन में यहाँ से जाने को थी।

कौशिक : चार दिन में ? इम्पॉसिबिल—देखो, घुटने के ऊपर अब भी सूजन है—और मरीज को डॉक्टर की सलाह के मुताबिक चलना चाहिए।

सोनाली : डॉक्टर कहे बैठो तो बैठो, डॉक्टर कहे खड़े रहो तो खड़े रहो ?

कौशिक : और कहे सो जाओ तो सो जाओ।

दोनों हँसते हैं।

सोनाली : आप डॉक्टरों से यही बड़ा दुख है। आप लोगों का बस चले तो अपने मरीजों को हमेशा सुलाए रखें।

कौशिक : मगर मरीज के भले के लिए।

सोनाली : पन्द्रह दिन आप मुझे यहाँ रखना चाहते हैं तो होटल के भाड़े का जो मीटर चढ़ेगा उसे कौन भुगतेगा ?

कौशिक : डोन्ट वरी, वो मैं चुका दूँगा।

सोनाली : आप चुकायेंगे ? लेकिन क्यों ?

कौशिक : मैंने आपको १५ दिन रुकने के लिये कहा है—इसलिये।

सोनाली : और इसके साथ-साथ आपका बिल भी चढ़ता जायेगा।

कौशिक : उसकी आप चिन्ता न करें। वह भी चुक जायेगा।

सोनाली : कौन चुकायेगा ?

कौशिक : मैं।

सोनाली : फिर तो मैं आपके अहसानों से दब जाऊँगी। जानते हैं मेरे दादा जी क्या कहते हैं—सोना, मेरी बेटी, किसी का कर्ज अपने सिर नहीं रखना चाहिये। दुनिया में सबसे ज्यादा सुखी वही होता है जिसके सिर पर कोई कर्ज न हो।'

कौशिक : (ताली पीटकर) हियर ! हियर ! तब तो तुम्हें मेरा बिल चुकाना ही होगा।

सोनाली : ये सब कितने रुपये का होगा ?

कौशिक : रुपये नहीं, मैं तुमसे प्रेजेन्ट लूँगा।

सोनाली : क्या ?

कौशिक : वक्त आने पर बताऊँगा। वेल, आप स्मोक करती हैं ?

सोनाली : कभी-कभी।

कौशिक : तब तो तुम्हें भी मुझे कम्पनी देनी होगी (सोनाली को सिग्रेट देकर अपने लाइटर से सुलगाता है) यू सी—आदमी को राइट कम्पनी मिले तो स्वर्ग यहीं है, यहीं है, यहीं हैं। वो मशहूर शेर तुम्हें याद होगा।

चांदनी रात, शराबे जाम, और माशूक हो बगल में,
तो दुनियां की सारी लज्जत उड़ती है तन-बदन में।

सोनाली : (सिग्रेट की चरस का असर होने लगता है) डॉक्टर, इस सिग्रेट की लज्जत ही कुछ और है ?

कौशिक : यह सिग्रेट ही दूसरी तरह की है। बहुत थोड़ी कम्पनियां ही ऐसी सिग्रेट बनाती हैं।

सोनाली : (कटाक्ष पूर्ण स्वर में) बनाती हैं ! (बहकने लगती है) ठीक है, बिल्कुल ठीक है, पीने के लिये बनाती हैं—डॉक्टर, यह क्या—आपका चेहरा ?

कौशिक : क्या हुआ मेरे चेहरे को ?

सोनाली : मिस्टर हाइड, डॉक्टर जेकील और मिस्टर हाइड के हाइड जैसा भयंकर लग रहा है।

कौशिक : यह तुम्हारा भ्रम है। अब ऐसा सोचो कि मैं क्यूपिड हूं।

सोनाली : स्टुपिड !

कौशिक : स्टुपिड नहीं—क्यूपिड यानी कामदेव।

सोनाली : कामदेव (ध्यान से घूरकर देखते हुए) काम करो, काम ! अब तो तुम मुझे हिप्पो लग रहे हो।

कौशिक : (सोनाली को बाँह में लेकर) हिप्पो नहीं, हिप्पी।

सोनाली : हिप्पी नहीं, हिप्पो—हिप्पोपोटेमस…!

फिर अन्धेरा।

सोनाली : ऐ···डॉक्टर, लाइट किसलिए बन्द की ?

कौशिक : जो लड़की बीमार हो, उसे धीरे-धीरे सो जाना चाहिये। यू आर ए गुड-गुड गर्ल, चलो सो जाओ।

सोनाली : अच्छा, मैं जाती हूँ—लेकिन डॉक्टर तुम अलग जाओ न।

कौशिक : डॉक्टर को ऐसे मरीज का साथ नहीं छोड़ना चाहिये।

सोनाली : जाओ···जाओ न···और न आओ···यहाँ मेरे पास नहीं···यू नाटी ब्वाय ···अरे-अरे···यह तुम क्या कर रहे हो···छोड़ो···छोड़ो···।

प्रकाश होता है। फिर कैफे का दृश्य।

सोनाली : और उस नराधम ने मुझे इस तरह अपने जाल में फँसाया। फिर हर महीने मेरे लिये छोटी-बड़ी प्रेजेन्ट और सौगातें लाने लगा। लेकिन उसकी हर भेंट के पीछे गन्दी वासना की प्यास जुड़ी हुई थी। ···साधु के भेष में उस शैतान ने मेरे सुख में आग लगा दी।

सोनाली ड्रिंक पीने के लिये रुकती है।

रूपेश : फिर ?

सोनाली : फिर उसे मुझसे ज़्यादा हसीन एक नर्स मिल गई। और वह मुझसे अलग रहने लगा। मेरी छाया भी कहीं उस पर न पड़ जाय, इसलिए अपनी काया को छिपाने लगा—क्रूर! डेविल!

रूपेश : तो ऐसे डेविल को अपने काबू में लाओ।

सोनाली : काबू में लाऊँ ? ठीक कहते हो डॉक्टर। लेकिन डॉक्टर, प्रेम कोई सरे बाजार बिकने वाला लेन-देन का सौदा तो नहीं, कि डिवीडेन्ड मिला तबतक मन भाये और नहीं मिला तो बेच डाला। खैर मुझे गर्भ रह गया। एक गाँव में मैंने एक शिशु को जन्म दिया।

रूपेश : अब वो बच्चा कहाँ है।

सोनाली : यहीं के अनाथ आश्रम में। मैंने अपने शरीर के टुकड़े को अपने से अलग कर दिया—सिर्फ उस नराधम के कारण। डॉक्टर ऐसे लोगों को इस दुनियाँ में जीने का कोई हक नहीं है। मेरे जीवन में उस पापी ने आग लगा दी। मैंने अपना सब कुछ स्वाहा कर डाला। मेरी रातें बैरन बन गईं। वो यादें प्रतिशोध की आग बनकर मेरे अंग-अंग को झुलसाती रही हैं।

रूपेश : तो उस आग को बुझाने के लिए अब तुमने मुझे फाँसा है ! बहुत खूब ! तुम्हारा जीवन तो नष्ट हुआ ही, अब मेरे सुखी संसार में आग लगाने के लिये तुम चिंगारी डालना चाहती हो ?

सोनाली : नहीं डॉक्टर। तुम्हारी पत्नी के सामने में सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हूँ। उस रात मोटर ऐक्सीडेन्ट मैंने जानबूझ कर किया था। कंधे का जख्म तो मैं पहले ही करके गाड़ी में बैठी थी। मैंने तुम्हें फँसाया —महज अपने स्वार्थ के कारण। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है—मैंने जो कुछ भी किया है अपने स्वार्थ के लिये किया है—लेकिन कौशिक— उसे मैं कभी माफ नहीं कर सकती। स्त्रियों के जीवन को फूल के समान समझकर मसल देनेवालों को तो जिन्दा ही आग लगाकर जला देना देना चाहिये।

रूपेश : उसका खून करने के लिये तुमने मुझी को क्यों पसन्द किया ?

सोनाली : क्योंकि तुम दोनों एक साथ काम करते हो। तुम बड़ी आसानी से यह काम कर सकते हो—एकाध डोज पिलाओ—खेल खत्म !

रूपेश : इम्पासिविल ! मैं यह काम नहीं कर सकता ! चाहो तो इस कैफे में मेरी फजीहत भी कर सकती हो लेकिन किसी की जान लेना मेरे लिये नामुमकिन है। मैं यह घिनौना काम नहीं करूँगा।

सोनाली : तो फिर डॉक्टर इसका नतीजा भी भोगने के लिये तैयार रहना।

रूपेश : नतीजा तो स्लो प्वाइजन के रूप में चरस लेकर तुम स्वयं भोग रही हो।

सोनाली : चरस प्वाइजन नहीं है। इससे मेरे मन को राहत मिलती है। अगर चरस जहर होती तो मैं जिन्दगी से कब की हार गई होती ! मुझे किसी का डर नहीं है, लेकिन डॉक्टर तुम्हारा हाल मुझसे बुरा होगा।

रूपेश : क्या करोगी तुम ?

सोनाली : उस रात जब मैं तुम्हारे घर गई थी तो अपने साथ पर्स में एक पॉकेट टेप रिकार्डर और एक आटोमेटिक कैमरा छिपाकर ले गई थी। हम दोनों के बीच हुआ सारा प्रेमालाप टेप हो चुका है—और जब मैंने तुम्हें आलिंगन में लिया था वह पोज अब फोटोग्राफ के रूप में कैद हो चुका है। अब

तुम ही सोचो डॉक्टर वो टेप मैं तुम्हारी पत्नी को सुनाऊँ—वो फोटोग्राफ उसे दिखा दूँ—तो तुम्हारा क्या हाल होगा ?

रूपेश : यू ब्लैकमेलर !

सोनाली : ब्लैकमेलर ? (हँसती है) भूलते हो डॉक्टर, इंग्लैंड के एम० पी० लॉर्ड लेम्बरन को कालगर्ल नोरपालेविस ने फँसाया था, उसी तरह सोनाली ने डॉक्टर रूपेश मेहता को फँसा लिया—यह ब्लैकमेलिंग हुई ?

रूपेश : उस टेप और फोटो और निगेटिव की कीमत क्या होगी ?

सोनाली : कीमत नहीं, मुझे अपना काम चाहिये—और वो है कौशिक का ··· (गला काटने का अभिनय) फिर मैं भी सुखी और तुम भी सुखी ।

रूपेश : कतई नहीं । ये मुझसे नहीं होगा । यू कैन डू ऐज यू विश !

अन्धकार । कुछ देर बाद ड्राइंग रूम में प्रकाश उभरता है । शाम का समय । कमरा खाली है और प्रकाश खिड़की से आ रहा है । रूपेश का प्रवेश । थका-हारा सा आकर सोफे पर निढाल पड़ जाता है । भीतर से वन्दना आती है । स्विच आन करती है ।

वंदना : यह क्या ? आप यहाँ बैठे हैं ?

रूपेश : हाँ ।

वंदना : बत्ती क्यों नहीं जलाई ?

रूपेश : ऐसे ही ।

वंदना : ऐसे ही क्या ? आज शाम को सात बजे हम लोगों को पड़ोस में दीक्षित जी के यहाँ जाना था न ?

रूपेश : मुझे याद नहीं रहा ।

वंदना : आप भी खूब हैं । दीक्षित-दम्पत्ति अपने सुखी दाम्पत्य की रजत जयन्ती मना रहे हैं और हम लोगों को ख़ास तौर पर इन्वाइट कर गये हैं—अब अगर हम लोग नहीं जाते हैं तो वे बुरा न मानेंगे ?

रूपेश : आज मेरा सिर बुरी तरह दर्द कर रहा है। तुम और चाचा जी हो आओ।

वंदना : चाचा जी को तो मैंने पहले ही वहाँ भेज दिया है और कहला दिया है कि हम लोग जरा लेट आयेंगे। चलिये, मुँह जुठार कर जल्दी ही लौट आयेंगे।

रूपेश : नहीं वन्दना, आज मुझसे आग्रह मत करो।

वंदना : ऐसी क्या बात है ? लगता है, उस रूपाली के केस में उलझे हुए हो।

रूपेश : नहीं-नहीं ! ऐसे तो न जाने कितने केस मैंने ठीक किये हैं। क्या उन केसों में कभी तुम्हारी मदद ली ?

वंदना : मगर यह रुपाली तो कोई असाणारण मरीज लगती है ?

रूपेश : यह तुम किस तरह कह सकती हो ?

वंदना : जिस तरह से तुम उससे फोन पर बातें कर रहे थे, मुझे लगा कि बहुत कुछ झूठी और बनावटी बातें थीं। आपकी आवाज डॉक्टर पेशे की कुदरती आवाज-जैसी नहीं थी। मुझे लगता है कि आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं ?

रूपेश : ये सब खामख्याली अपने दिल से निकाल दो। तुमसे क्या छिपाना ?

वंदना : कौन जाने। आप जानते हैं कि मनुष्य के भूतकाल पर ही उसके भविष्य का जीवन गढ़ा जाता है।

रूपेश : तुम्हारा ख्याल गलत है। कोई आदमी अगर कभी कोई भूल करता है तो उसकी भूल को पैमाना बनाकर उसे नापना गलत है।

वंदना : आपने ऐसी कोई भूल की है ?

रूपेश : आफकोर्स नाट। पर ऐसे भी मनुष्य हैं जो संयोग से भोग बन जाते हैं।

वंदना : लेकिन संयोगों के कारण मनुष्य के आदर्श तो नहीं बदलते। मैंने आपको एक आदर्श पुरुष के रूप में प्रेम किया है। हम स्त्रियाँ जिनसे प्रेम करती हैं, उनकी पूजा करती हैं। ये पूज्य भाव चला गया तो सब कुछ चला गया। लेकिन मुझे विश्वास है कि आप मेरे जीवन की इस मान्यता को कभी झूठा नहीं होने देंगे। आप उन लोगों में से नहीं हैं जिनके लिये

ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल है। दुनियां की गन्दगी से आप हमेशा दूर रहे हैं। मैं फिर पूछती हूं कि आप ऐसे तो नहीं हैं ना ?

दरवाजे की कालबेल बजती है। वन्दना दरवाजा खोलती है। कौशिक का प्रवेश।

कौशिक : भाभी मुझे आशीर्वाद दीजिए।

वंदना : क्यों ? आज तुम्हारा जन्म दिन है क्या ?

कौशिक : जन्म दिन जैसा ही अवसर समझो—आज मेरा लग्न दिन है—नये जीवन का प्रारम्भकाल। मेरी शादी पक्की हो गयी है।

वंदना : तुम्हारी अम्मा मान गई ?

कौशिक : हां। हमारे रूपेश भाई ने ही अम्मा को मनाया। इनका वचन अम्मा के लिए वेद वाक्य है। पन्द्रह दिन बाद मेरा और अनीता का विवाह हो जायगा।

रूपेश : पन्द्रह दिन बाद ? तब तो तुम्हीं जल्दी मचा रहे थे कि कहीं शुभ-काम में कोई विघ्न न पड़ जाये और इसलिए जल्द विवाह मुहुर्त निकलवाना। अब क्या हो गया ?

कौशिक : वो तो मैंने ऐसे ही कहा था।

वंदना : इनकी अगर शादी हो जाय तो इसमें आपको क्या दिक्कत है ? अब कोई ये बच्चे तो हैं नहीं।

कौशिक : रूपेश भाई, इसके सिवा कोई और तो कारण नहीं है ना ? आपने तो मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया।

वंदना : और क्या कारण होगा कौशिक भाई, इधर कई दिन से इनका मन बड़ा अस्वस्थ है। डॉ० ध्रुव की मौत के सिलसिले में पुलिस इतना तंग कर रही है कि क्या कहूं। पड़ोस में दीक्षित जी के यहां जाना था और इन्हें याद ही नहीं रहा।

कौशिक : तो आप दोनों बाहर जा रहे थे ?

वंदना : हां—क्यों ?

कौशिक : मेरा फोन खराब हो गया है—मुझे कई फोन करने हैं और खास बात यह है कि मैंने अनीटा को आठ बजे यहां बुलाया है। वो नीचे ही मेरा

इन्तजार करेगी। (सिग्रेट निकालकर रूपेश को ऑफर करता है) विल यू स्मोक।

रूपेश : नो। थैंक्स।

वंदना : तुम भी खूब हो। उसे नीचे खड़े होने को क्यों बोल दिया? यह घर क्या पराया है? अच्छा हम लोग चलते हैं। अनीटा को ऊपर ही बुला लेना और फोन पर ज्यादा बातें मत करना। कुछ बातें अनीटा से भी करने के लिए बचा लेना। (रूपेश से) चलिये हम लोग चलें। (कौशिक से) वापसी में देर लगेगी—तुम लोगों का जब तक जी चाहे यहाँ रहना। हाँ, जाते वक्त दरवाजा बन्द करना मत भूलना।

वन्दना और रूपेश जाते हैं। कौशिक फोन करता है।

कौशिक : हल्लो! कौन रश्मि? कौशिक हियर···फाइन! तुम्हें खुशखबरी देनी है—सुनो, अब मैं भी एक से दो होने जा रहा हूँ—समझीं मेरी शादी है—यस। क्या? वन—अपान-वन इस ईक्वल टु वन? दैट्स फाइन।

सोनाली आती है। कौशिक को देखकर उसकी त्योरियाँ चढ़ जाती हैं। कौशिक बोलता रहता है।

कौशिक : मैं तो यह जानता था कि कि आदमी सिंगल हो तो डबल हो जाता है। फिर परम्यूटेशन कॉम्बीनेशन से बढ़ता रहता है। तुमने तो नई थ्योरी निकाली है कि—बोलो। मैं सुनने को आतुर हूँ—सिर्फ एक काम है कि मेरी अनु अभी नीचे आने वाली है। अनु—माई फ़ियान्से···हाँ—शी इज ए स्वीट लिटिल डार्लिंग। आई कैन नाट लिव विदआउट हर। हाँ-हाँ पत्नी अर्धांगिनी कहलाती है इसलिए वन प्लस वन इज ईक्वल टु वन ऐण्ड ए हाफ—क्या वन अपान वन···ओह रश्मि, यू नॉटी!

खूब हँसता है। सहसा उसकी नजर सोनाली पर पड़ती है, बोल उठता है—सोनाली! (फोन पर) नहीं-नहीं, कुछ नहीं। (फोन रखता है)—तुम यहाँ?

सोनाली : क्यों, ताज्जुब हो रहा है ?

कौशिक : लेकिन—डॉक्टर मेहता के साथ तुम्हारी जान-पहचान कैसे हुई ?

सोनाली : कौशिक जी—डॉक्टर इज ऐन ऐनीमल. ह्विच कैन वी फाउन्ड ऐट ऐनी टाइम, ऐनी प्लेस, एनी अकेजन। और इसके साथ कभी भी सम्बन्ध बनाया जा सकता है—तुम्हारे साथ भी तो सम्बन्ध हुआ था—याद है ? खैर जाने दो। यह बताओ तुम यहाँ कैसे आये ?

कौशिक : अँ···हाँ—वेल, रूपेश और मैं एक ही हास्पिटल में काम करते हैं।

सोनाली : हूँ ! मेरे साथ तो तेरा काम नहीं चला। अब क्या यहाँ डॉक्टर मेहता की पत्नी के साथ काम······

कौशिक : स्टॉप इट !

सोनाली : किसलिए ? बाघ के मुँह में जब एक बार आदमी का खून लग जाता है तो वह बार-बार नये शिकार की खोज में छटपटाता रहता है—उम्र, वक्त, जात-कुजात, दोस्ती, इन सब को वह ताक पर रख देता है।

कौशिक : भाभी के बारे में अगर एक भी शब्द बोलीं तो···

सोनाली : तो क्या करोगे ? तुम्हारी भाभी स्त्री हैं तो मैं क्या कुतिया हूँ ? पातकी —कामांध !

कौशिक : सोनाली, जबान संभालकर बात करो।

सोनाली : जबान बन्द करके बैठी रही, तभी तो तुमने मेरी यह हालत की है। लेकिन अब तो मैं सरे-बाजार तेरे कुकर्मों को उजागर करूँगी।

कौशिक : तुम ? तुम कुछ भी नहीं कर सकतीं।

सोनाली : मैं ? अरे डॉक्टर मैं तेरा जीना हराम कर दूंगी—डाकिनी बनकर मैं हमेशा तेरे आगे-पीछे, हर कदम पर छाया की तरह तेरा पीछा करूँगी। मैं तेरी वो हालत बना दूंगी कि जमीन के अन्दर भी तुझे जगह नहीं मिलेगी। नीच ! कमीने ! कुत्ते ! तू समझता है कि मुझे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए अकेला छोड़कर अपनी नई नवेली कठपुतली के पलने में मौज करेगा ! —'माई स्वीट लिटिल डार्लिंग ! आई कैन नाट लिव विदाउट यू ! याद है, यही शब्द तूने मुझसे भी कहे थे ! ···और

अब मैं तुझे किसी दूसरी के साथ ब्याह रचाने दूंगी……असम्भव—इम्पॉसिबिल !

कौशिक : इस इम्पासिबिल को मैं पॉसिबिल बना दूंगा—और सोनाली, तू अब मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकती। अब तू असहाय है—चरस की गुलाम है—तेरा शरीर खोखला हो चुका है—तेरा मन मर चुका है और अब तू सिर्फ मरने के लिये ही जी रही है।

सोनाली : लेकिन मुझे चरस की लत लगाई किसने ?

कौशिक : जैसे बीन की लत लग जाने पर नागिन कब्जे में आ जाती है, वैसे ही मैंने तुझे चरस की लत लगाई। यह स्लोप्वॉइजन है मैडम, असली तेज जहर से तो एक ही झटके में जीवन का अन्त होता है…मगर चरस ! यह तो नागपाश है ! ……यह तुझे रगड़-रगड़ कर मारेगा। बोल, सिग्रेट चाहिए ?

सोनाली : (सब कुछ भूलकर ललक के साथ खुशामदी स्वर में) सिग्रेट ? हां-हां चाहिये। लाओ……दो न ! सच, आज बहुत दिन से यह अमृत नहीं मिला। इसके लिए मेरा जी तरस रहा है। तुम बहुत अच्छे हो कौशिक। जी चाहता है, आज मन डूब जाय इतनी डोज लूं। (कौशिक एक सिग्रेट फेंकता है। सोनाली झपटकर लेती है। कौशिक लाइटर निकालता है। उसे भी सोनाली झपट लेती है। लेकिन सिग्रेट को सुलगाती नहीं है बल्कि सिग्रेट को अपने पर्स में रख लेती है। उसका स्वर पुनः बदल जाता है।) कोई बात नहीं, अब मैं तेरी जान ले सकती हूं।

कौशिक : तू ? …तू मेरी जान लेगी ? (हंसता है) बहुत अच्छे ! एक तो चरस की सिग्रेट दी, बदले में थैंक्स कहना तो दूर, तू मेरी जान लेने पर उतारू हो गई ?

सोनाली : हां-हां, मैं ! मैं तेरी जान लूंगी !

सोनाली अचानक कौशिक पर हमला करती है और दोनों हाथों से कौशिक का गला दबाने लगती है। घड़ी भर के लिये कौशिक की घिग्घी बंधने लगती है, फिर जोर लगाकर वह सोनाली को पीछे ढकेल देता है।

कौशिक : (अट्हास करता है) हः-हः-हः ! चूड़ियाँ तूने पहन रखी हैं मैंने नहीं। मेरी जान इतनी सस्ती नहीं है।

कौशिक जाता है। फोन की घंटी बजती है। सोनाली रिसीवर उठाती हे।

सोनाली : (फोन पर) हलो ! हॉस्पिटल से बोल रहे हैं ? डॉक्टर ? वो सर ढँककर सो गये हैं। मैं उनकी वाइफ बोल रही हूँ। ···हूँ···क्या हुआ है ? किसे ? मुझे ? डॉक्टर को ? —एजीन जाइटिस···हाँ—हाँ—मेलेन-जाइटिस। ···मेल यानी आदमी इन याने अन्दर और जाइटिस माने··· टीस···दर्द—हाँ, ग्रीक शब्द है—और लेटिन में इसके माने हैं···क्या नहीं समझता···हाँः···हाँः !

रिसीवर रखती है तभी वंदना आ जाती है और कौशिक की जगह सोनाली को देखकर चौंकती है।

वंदना : कौन ? अनीटा !

सोनाली : अनीटा ?

वंदना : अनीटा यहाँ आने को थी। कौशिक कहाँ है ?

सोनाली : कौन कौशिक ?

वंदना : तो फिर तुम कौन हो ?

सोनाली : मैं ? सोनाली।

वंदना : सोनाली ! आवाज तो कुछ पहचानी-सी लग रही।

सोनाली : हाँ, फोन पर। लेकिन उस उक्त मैंने अपना नाम रूपाली बताया था।

वंदना : रूपाली ! लेकिन गलत नाम बताने की वजह ?

सोनाली : आपके परम पूज्य पतिदेव को सबक सिखाने के लिये।

वंदना : कैसे ?

सोनाली : वह ऐसे वंदना देवी, कि आप अपने सर्वगुण सम्पन्न पतिदेव डॉक्टर रूपेश मेहता को समझा दीजिए कि किसी स्त्री मरीज के साथ जरूरत से ज्यादा छूट लेना ठीक नहीं।

वंदना : क्या किया उन्होंने ?

सोनाली : आप जानना चाहती हैं ? तो जान लीजिये। एक बार मेरे साथ ही घटना घट चुकी है। मेरे सिर में सख्त दर्द उठा था—किसी ने कहा कि किसी साइकियाट्रिस्ट को दिखाओ। डॉ० रूपेश मेरे घर आये और एक्जामिन करने के बहाने मेरे शरीर के साथ छेड़छाड़ करने लगे। उस समय मैं घर में अकेली थी। मैंने जब समझाना चाहा कि डॉक्टर यह आपको शोभा नहीं देता तो चिढ़कर उन्होंने मेरे साथ बलात्......

वंदना : मैं नहीं मानती—यह सरासर झूठ है।

सोनाली : मेरी दुख भरी कहानी सुनेंगी तब तो मानेंगी। मुझे गर्भ रह गया। एक गाँव में जाकर मैंने एक बच्चे को जन्म दिया। मेरे भाई को पता न चले, यह सोचकर मैंने उसे यहाँ के अनाथालय में भरती कर दिया। उसका नाम है मुकेश। फिर एक दिन डॉक्टर ने मुझे फोन किया कि पत्नी और चाचा जी बड़ौदा गये हैं, मैं अकेला हूँ, तुम मेरे ही घर आ जाओ। उस रात मैं इस घर में आई थी। सारी रात हमने एक साथ चैन से गुजारी।

वंदना : इस बात का कोई सुबूत है तुम्हारे पास ?

सोनाली : सुबूत ! बहुत पक्का सुबूत है। रूपेश को सबक देने के लिए मैं अपने पर्स में पॉकेट टेप रिकार्डर और आटोमेटिक कैमरा रखकर लाई थी। लो ये दोनों फोटो देखो ! (फोटो देखकर वन्दना स्तब्ध रह जाती है) अब टेप भी सुन लीजिये।

वंदना : सुनाओ।

सोनाली टेप रिकार्डर ऑन करती है—टेप बजने लगता है।

सोनाली : सच कहना, तुम और तुम्हारी बीवी कभी लड़ते-झगड़ते तो नहीं हो ?

रूपेश : वेल, जब घर में चार बर्तन होते हैं तो बजते ही हैं।

सोनाली : यह तो वही हुआ कि 'जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया।' सेम ओल्ड स्टोरी—महज ढोंग ! अच्छा, यह बताओ—तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि अगर शादी न की होती तो कितना अच्छा था।

रूपेश : सच, कभी-कभी लगता है। पर यह सब बातें छोड़ो और इस सोफे पर लेट जाओ।

सोनाली : ओह नो डॉक्टर, यह क्या करते हो ? छोड़ो न, तुम्हारा बेड-रूम कहाँ है ?

रूपेश : ऊपर।

सोनाली : तो चलो। (टेप बन्द करके) सुना सौभाग्यवती वन्दना देवी ? सारी रात मैंने यहाँ बिताई थी। सुबह मैंने आपके पतिदेव को चाय बनाकर दी। आप आने को थीं, इसलिए मैं चली गई—लेकिन मैं अपने सेन्ट की शीशी यहाँ भूल गई थी।

वंदना : तो प्रिया सेन्ट की शीशी तुम्हारी थी ?

सोनाली : जी हाँ।

वंदना : सोनाली क्या तुम यह समझती हो कि टेप सुनकर मैं तुम्हारी बातों को सच मान लूंगी ? यह तुम्हारी भूल है। मैं तुम्हारी तरह टिप-टाप फैशन नहीं करती इसलिये शायद तुम मुझे पिछले जमाने की बिना पढ़ी-लिखी औरत समझ बैठी हो। यह सच है कि मैं आज के मॉडर्न जमाने के समंदर की लहरों में तैरी नहीं हूँ लेकिन ये लहरें जिन्दगी में कैसा भयंकर तूफ़ान पैदा कर देती हैं, इस बारे में अच्छी तरह जानती हूँ।

सोनाली : तो आपको इस टेप पर यकीन नहीं है ?

वंदना : कतई नहीं। इस दुनिया में एक-दूसरे से हुबहू मिलते चेहरे तो कम मिलते हैं, लेकिन एक ही आवाज के सैंकड़ों लोग मिल जाते हैं। फिर बहुत-से लोग आवाज की हुबहू नकल भी कर लेते हैं—और टेप में तो बहुत से गिमिक्स भी किये जा सकते हैं।

सोनाली : यानी कि आपको अपने पतिदेव की आवाज पर शक है ? खैर, एक बार फिर से सुनो यह शब्द—'जब घर में चार बर्तन होते हैं तो बजते ही हैं…।'

वंदना : ठीक तो है। बर्तन बजते हैं लेकिन जरूरी नहीं कि घर में सिर्फ पति-पत्नी ही हों। माँ, लड़के, पिता-पुत्र, भाई-बहन के बीच भी झगड़े होते हैं—बर्तन खनकते हैं।

सोनाली : और ये—'…यह सब बातें छोड़ो और सोफे पर लेट जाओ'…'ऊपर।' …यह सब बनावटी हैं ?

वंदना : बिल्कुल नकली। टेप रिकार्डिग को आगे-पीछे करके अर्थ का अनर्थ किया जा सकता है।

सोनाली : तो फिर श्रीमती वन्दना देवी मुझे इससे तेज हथियार का उपयोग करना होगा। आप अपने पति की आवाज पर विश्वास नहीं कर रही हैं। खैर, अब ये फोटो भी देख लीजिये। तब आप नहीं कह पायेंगी कि यह आपके पति नहीं हैं।

फोटो वन्दना को देती है—उन्हें देखकर वंदना मर्माहत होती है।

सोनाली : अब तो यकीन हुआ ? है न यही ड्राइंग रूम ? वही चीजें जो यहाँ रखी हैं ?

वंदना : यह फोटो तुम्हारे आटोमेटिक कैमरे ने खींचा होगा।

सोनाली : हाँ।

वंदना : और तुम दोनों ऊपर हमारे बेडरूम में गये थे ?

सोनाली : जी हाँ, वंदना जी। जहाँ डबल बेड पड़ा है। बेड के साथ लगी ट्रीपाड पर टेलीफोन रखा है उसके ऊपर दीवार पर आप और डॉ॰ मेहता के जोड़े की तस्वीरें टंगी हैं…उस तस्वीर की हया-शर्म भी न रखकर…

वंदना : बस करो।

सोनाली : हुआ यकीन ?

वंदना : पर सोनाली ! अक्सर आँखों से देखी और कानों से सुनी बातों में फर्क भी हो जाता है। मेरा मन तुम्हारी बातों पर यकीन करने को तैयार नहीं होता—जो बात आँखों से देखी न हो उस पर सिर्फ कानों से सुनकर विश्वास करना मूर्खता होती है। खैर, सच तो देर सवेर उजागर होकर ही रहेगा। लेकिन सोनाली एक बात जरूर कहूँगी किसी सुखी दम्पत्ति के साथ खिलवाड़ करना छोड़ दो। तुम अगर अपने मन की कोई गलत मुराद पूरी करना चाहती हो तो ईश्वर तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।

सोनाली : थैंक्यू वंदना जी, इसके बाद मुझे कुछ नहीं कहना है।

जाने लगती है।

वंदना : ठहरो। तुम यह टेप और फोटो मुझे दे सकती हो ?

सोनाली : फोटो दे सकती हूँ क्योंकि इसका निगेटिव मेरे पास है, पर टेप नहीं दूंगी। अगर और जिन्दा सबूत चाहिये तो आप अनाथालय में फोन करके पूछ सकती हैं। मैंने वहाँ अपना नाम रुपाली लिखवाया है—और बच्चे का मुकेश। —हाँ, क्या रूपेश घर में नहीं हैं ?

वंदना : नहीं, पड़ोस में पार्टी थी, हम लोग वहीं थे। मैं अपनी चाभी का गुच्छा यहीं भूल गयी थी वही लेने आई थी।

सोनाली : अच्छा ही हुआ। आप उनसे मेरा एक सन्देश कह दीजियेगा—कि दिए गये वचन तोड़ने का नतीजा कभी-कभी बहुत बुरा होता है।

वंदना : वचन ? कैसा वचन।

सोनाली : उसने मुझसे कहा था कि—सोनी, वंदना को छोड़कर मैं तुम्हें अपने घर में रानी की तरह रखूंगा। लेकिन अब ?··· ऐसे किस तरह मैं उसकी रखैल बनकर रह सकती हूँ ? ऐसे विश्वासघाती का तो मैं चेहरा तक नहीं देखना चाहती।

सोनाली पर्स और टेपरिकार्डर लेकर तेजी से चली जाती है। कुछ क्षण बाद वन्दना डाइरेक्टरी में नम्बर देखकर फोन करती है।

वंदना : अनाथालय ? ······मैं डॉ० मिसेज वंदना दलाल बोल रही हूँ। आपके यहाँ मुकेश नाम का कोई बच्चा है ? ···जी हाँ—मुकेश। उसके माता-पिता का नाम आप बता सकते हैं ? ······जी, मैं इसलिये पूछ रही हूँ कि यहाँ एक महिला पेशेन्ट आई है और उसकी कंडीशन बहुत सीरियस है। जी हाँ, वह अपने बच्चे से मिलना चाहती है। उसी ने आपके यहाँ का नम्बर दिया है। ······क्या ? ······जी नहीं, वह औरत फोन पर नहीं आ सकती। यू सी !—इट इज ए केस ऑफ सीवियर हार्ट अटैक। अगर पेशेन्ट की बात सही हो तो बच्चे को लेने के लिए आपके यहाँ भेजूं। प्लीज, क्या उसके माता-पिता का नाम नहीं बता सकेंगे ? ······ओह पिटी ! ······जी हाँ—उस स्त्री का नाम आपको बताऊँ ?—उसका नाम रुपाली है। यस-यस, रुपाली—हाँ ठीक। ··· तो यह रुपाली ही उस बच्चे की माँ है न ? ······गुड ! —और बच्चे के पिता का नाम ?······नहीं लिखाया ? ······प्लीज जरा अच्छी तरह कन्फर्म कर लीजिये।······ओह !

रिसीवर रख देती है। रूपेश का प्रवेश !

रूपेश : चाभी का गुच्छा लेकर आने में बड़ी देर लगा दी ? और कौशिक कहाँ है ?

वंदना : कौशिक तो गया। पर यहाँ कोई और भी आया था।

रूपेश : और कौन आया था ?

वंदना : आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं। आपका बहुत नजदीकी और सगा रिश्ता है उसके साथ !

रूपेश : मेरा नजदीकी रिश्ता ? सगा ?

वंदना : सगा नहीं बल्कि सगी !

रूपेश : पहेलियाँ मत बुझाओ, समझ में आने वाली सीधी बात बोलो।

वंदना : रुपाली।

रूपेश : रुपाली—कौन रूपाली ?

वंदना : कौन रूपाली ? उस दिन फोन पर उसी से तो बात की थी—वही साइको-न्यूरोसिस की पेशेन्ट।

रूपेश : अरे हाँ—वो रुपाली—याद आया। वह यहाँ आई थी ?

वंदना : हाँ। मगर आप चौंके क्यों ?

रूपेश : नहीं तो। अब कहाँ है ? वापस गई ?

वंदना : हाँ—आपके बच्चे के पास। बगैर बच्चे के माँ कैसे रह सकती है ? आपको भले ही अपने बच्चे की फिक्र न हो !

रूपेश : मेरा बच्चा ? क्या बक रही हो ? बातें करने का यह कौन सा तरीका है ? तुम होश में तो हो ?

वंदना : जी हाँ मैं पूरे होशोहवास में बातें कर रही हूँ रूपेश......नहीं डॉक्टर साहब ! रुपाली...नही-नहीं, रूपाली नहीं, बल्कि सोनाली मुझे सब कुछ बता गई है।

रूपेश : क्या बता गई है ?

वंदना : वही—आपकी प्रणय-लीला की कहानी।

रूपेश : मेरी प्रणय लीला ?…समझा । तो इस सोनाली ने अपना जाल बिछा ही दिया ! …लेकिन वन्दना यह सब मुझे फँसाने के लिये बुना गया जाल है । वह बच्चा कौशिक का है ।

वंदना : कौशिक का ? झूठ बोलकर अब क्यों पाप के भागी बनते हैं डॉक्टर साहब ?

रूपेश : मैंने कोई पाप नहीं किया ।

वंदना : आपने कोई पाप नहीं किया ? सोनाली का टेप मैं सुन चुकी हूँ । मैं तुमको नहीं सुहाती, ठीक है न ? तुम्हें ऐसा लगता है कि शादी न की होती तो अच्छा था ? जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया—क्यों ? और उसे ऊपर के बेडरूम में ले गये ? बोलिये…मैं और चाचा जी जब बड़ौदा गये थे तब सोनाली यहाँ आयी थी या नहीं ? बताइये ?

रूपेश : हाँ – आई थी ।

वंदना : और वह सारी रात यहीं रही थी ?

रूपेश : हाँ ।

वंदना : एक ही बेडरूम में आप दोनों ने रात भी बिताई थी ?

रूपेश : नहीं, यह सच नहीं है ।

वंदना : नहीं ? तो यह फोटो ?

वन्दना फोटो देती है ।

रूपेश : दरअसल अपने पर्स में वह एक कैमरा लाई थी । और जानबूझ कर यहाँ, इस सोफे पर मुझसे लिपट गई थी ।

वंदना : मैं नहीं मानती । सेन्ट की शीशी आप मेरे लिये लाये थे—मुझसे इतना बड़ा झूठ बोलने की क्या जरूरत थी ? अब चुप क्यों हो गये ? दीजिये जवाब ! डॉक्टर साहब, पाप को स्वीकार करने के लिये मजबूत कलेजा चाहिए ।

रूपेश : वन्दना शान्त होकर मेरी बात तो सुनो… ।

वंदना : मुझे कुछ नहीं सुनना है आप यही कहेंगे न कि सोनाली ने मुझको फँसाया है ? फँसी तो मैं हूँ । इतने महीनों से यह गंदा खेल यहीं मेरे घर में खेला

जा रहा हूँ—और मैं अँधेरे में रही। जानते हैं इसका कारण? इसका कारण था कि मैं आप पर विश्वास करती थी। एक आदर्श पति मानकर मैंने हमेशा आपको पूजा, आपको प्रेम किया—जिसका फल आज मुझे यह मिला कि आपने मेरे ऊपर ही प्रहार किया!

रूपेश : नहीं वन्दना, नहीं। यह तुम्हारी गलतफहमी है।

वंदना : डॉक्टर साहब किसी रूपजीवा का रूप खरीदना है तो जाइये उसके पास जिसकी बाँहों में आपको सुख मिले। —आनन्द के पल बिताते हुए अगर अपना जीवन धन्य होता लगता है तो जाइये उसके पास……… जाइये। चले जाइये यहाँ से!

रूपेश : तो मैं चला जाऊँ?

वंदना : हाँ, चले जाइये। यह मेरा घर है। इसे मैंने बसाया है। मैंने सँवारा है। सप्तपदी के फेरे लेते समय मैंने प्रतिज्ञा ली थी कि इस घर को मैं अपना घर समझूंगी……यह घर मेरा है……आप चले जाइये। आज मुझे पक्का यकीन हो गया कि अपनी जिजिविषा को सन्तुष्ट करने के लिए ही आपने डॉ० ध्रुव को घर में बुलाकर उनकी हत्या की थी।

रूपेश : कह चुकीं तुम। अब मेरा भी जवाब सुन लो—आदमी की जिन्दगी के दो पहलू होते हैं—एक उसकी रोजमर्राह की जिन्दगी, उसका वास्तविक जीवन। और दूसरा, उसकी अपनी मानसिक दृष्टि, उसके विचारों का कल्पना लोक। वास्तविक दुनियाँ की अपेक्षा वह अपने मानसिक कल्पना लोक में ज्यादा मस्त रहता है। उसकी इस मस्ती में दूसरे की हस्ती भी खतरे में पड़ जायेगी—इसका उसे अहसास तक नहीं होता। अपने इसी मानसिक आवेश में इस वक्त तुम मुझसे गलत वर्ताव कर रही हो। वन्दना सप्तपदी की प्रतिज्ञा अगर तुमने ली थी तो मैंने भी ली है। सवाल सिर्फ इतना है कि बहेलिये के जाल में फँसा जन्तु काल के मुँह में जब तक नहीं चला जाता तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि वह जाल से छूटकर निकल जायेगा या हमेशा के लिए इस दुनिया से दूर चला जायगा। यह और बात है कि हम यहीं रहकर एक दूसरे को भले न पहचानें—लेकिन समाज के आगे बेआबरू होना ठीक नहीं है। लोगों को अपनी ओर उँगली उठाने का मौका देना अच्छा नहीं है. इस घर को

अगर तुमने अपना घर माना है तो मैंने भी इसे अपना घर माना है। इसलिए मैं तुमसे यही कहूँगा। तुम्हें जो करना है करो।

वंदना : ठीक है।

वंदना फौरन बाहर चली जाती है। बाहर बिजली कड़कने की आवाज—तेज हवा और तूफान का शोर।

अन्धकार

(अगले अंक में जारी)

बंगाल के रंगकर्मी मृनाल कर से बातचीत

डॉ० कृष्ण मोहन सक्सेना

"बंगाल में नाट्यकला के क्षेत्र में संलग्न कलाकार को सरकारी सेवाओं में विशिष्ट स्थान प्रदान किया जाता है। इसी आधार पर मुझे कई अच्छी नौकरियाँ मिलीं किन्तु सन् १९७७ में मैंने बंगाल के लोकप्रिय नाट्य जात्रा के उन्नयन तथा इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया और "इंद्रसभा ऑपेरा" मंडली गठित की तबसे मैं अपना पूरा समय इसी क्षेत्र में दे रहा हूँ। फिल्मों एवं नाटकों में अभिनय भी फिलहाल स्थगित कर दिया है।' ये विचार बंगाल के युवा निर्देशक अभिनेता श्री मृनाल कर ने एक विशेष भेंट में व्यक्त किए। पिछले दिनों श्री कर के निर्देशन में 'श्री श्रीसर्वजनीन दुर्गापूजा कमेटी, लखनऊ के विशेष आमंत्रण पर पहली बार जात्रा के चार सफल प्रदर्शन हुए थे।

इंद्रसभा सम्बन्धी मेरी जिज्ञासा का समाधान करते हुए श्री कर ने बताया कि सारा देश इंद्रभगवान को राजा मानता है। बंगाल में जात्रा को भी राजा कहा जाता है क्योंकि इस क्षेत्र की जनता का यह लोकनाट्य प्राण स्वरूप है और उनके पारम्परिक जीवन में सर्वोपरि स्थान रखता है। इसलिए मैंने अपनी स्वगठित मंडली का नाम "इन्द्र सभा" रखा ऐसा इसलिए भी कि उद्देश्य अखिल भारतीय स्तर पर कार्यक्रम प्रस्तुत करना है। लखनऊ की जो "इन्द्र सभा" परम्परा नवाबी काल की देन है उससे इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

जात्रा की लोकप्रियता सम्बन्धी मेरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि बंगाल में नाटक तथा फिल्म की अपेक्षा लोग जात्रा के प्रति अधिक अभिरुचि रखते हैं। पूरे बंगाल में जात्रा की लगभग एक हजार मंडलियाँ हैं। गाँवों में तो जात्रा ही एकमात्र मनोरंजन एवं सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। मैं तीन साल में सात सौ प्रदर्शन कर चुका हूँ। बंगाल के बाहर बम्बई, दिल्ली, लखनऊ में कुछ ही किये हैं। मेरी मण्डली में पचास कलाकार हैं। चार सौ से दो हजार के बीच मैं मासिक वेतन दे रहा हूँ। डॉयमंड हैवर के समीप मेरा एक सुविधाजनक पूर्वा-

व्यास भवन है। बंगाल में यात्रा करने का निजी वाहन है। बंगाल में एक प्रदर्शन का पाँच हजार तथा बाहर के लिए दस हजार मानदेय निर्धारित किया है। एक माह में बीस कार्यक्रम सम्पन्न हो जाते हैं। इससे आप इस लोकनाट्य की गरिमा तथा व्यापकता का अनुमान लगा सकते हैं। मान लीजिये एक ही स्थान पर आसपास जात्रा, फिल्म और नाटक हो रहा है—तो लोग फिल्म और नाटक को छोड़कर जात्रा ही देखेंगे। जिन कथानकों पर जात्रा खेली जाती हैं, उन्हीं पर फिल्म भी बन जाती हैं और जात्रा के कलाकारों के पीछे फिल्म वाले भी भागते हैं, ताकि उनकी लोकप्रियता से फायदा उठा सकें। फिल्मी कलाकार जात्रा में अभिनय करने में गौरव महसूस करते हैं।

"जब जात्रा के एक कथानक पर फिल्म बन जाती है, तब तो उस नाट्य का महत्व कम हो जाता होगा?" मैंने पूछा।

श्री, कर ने कहा—ऐसा नहीं है। बंगाल की जनता में नाट्य का संस्कार जन्मजात है। फिल्म की एक सीमा है—सम्पादन-कार्य से विस्तार को बचाया जाता है, जबकि जात्रा में सभी प्रसंगों को बखूबी प्रदर्शित किया जाता है। जात्रा में दर्शक जीवन्तता महसूस करते हैं क्योंकि कलाकारों से उनका सीधा साक्षात्कार होता है और वास्तविक रूप में। इसलिए एक कथानक पर फिल्म बन जाने पर भी जात्रा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि उसकी लोकप्रियता में पहले की अपेक्षा वृद्धि ही हो जाती है।"

इतिहास तथा बंगाला साहित्य विषय से एम०ए० तक शिक्षा प्राप्त श्री कर अनेक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं और कलकत्ता की प्रख्यात नाट्य संस्था "रंगमहल" तथा "स्टार" की नाट्य प्रस्तुतियों में पुरस्कृत हुए हैं। "लाल कुटी" फिल्म में अभिनेता डैनी ने काम किया था, बम्बई में जब इसी कथानक पर श्री कर ने जात्रा प्रस्तुत की, तो डैनी इतनें प्रभावित हुए कि उन्होंने श्री कर को स्वर्ण पदक से अलंकृत किया। इस सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि श्री उत्पल दत्त ने इस दिशा में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। वे एक प्रदर्शन का पचीस हजार मानदेय लेते हैं—उनकी मंडली बहुत बड़ी है। उन्होंने राजनैतिक विषयों पर ही मुख्य रूप से जात्रा प्रस्तुत की जिससे उनकी मंडली पर प्रतिबन्ध भी लगा था। मैं सामाजिक समस्याओं को ही आधार बनाता हूं।

जात्रा की पुरानी परंपरा तथा वर्तमान रूप में अन्तर सम्बन्धी मेरी जिज्ञासा

पर उन्होंने बताया कि वाद्यों में कोई अन्तर नहीं आया। पहले संगीत पृष्ठभूमि से होता था अब पात्र स्वयं ही गाते हैं। पहले जात्रा रात-रात भर तक होती थी—गाँवों में आज भी हो रही है। किन्तु अन्य स्थानों पर ढाई तीन घंटे की प्रस्तुति के लिए आलेख के विस्तार को हटाकर कथानक के सभी मूल बिन्दुओं को ही प्रस्तुत किया जाता है। पहले की जात्रा संवाद बहुल होती थी और अब नाटकीयता को ध्यान में रखते हुए चुस्त संवाद रहते हैं। अभिनय पर अब बहुत जोर दिया जाता है और दर्शकों को यही सर्वाधिक प्रभावित करता है। स्टेज चारों तरफ से पूर्ववत खुला रहता है। अब प्रायः नारी पात्र की भूमिका में अभिनेत्रियाँ ही भाग लेती हैं। प्रकाश व्यवस्था की तकनीक का अब प्रयोग होने से इस पुराने लोकनाट्य की आकर्षण क्षमता में वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर परम्परा का विकास हुआ है और उसकी आत्मा यथावत् सुरक्षित है।

एक नयी जात्रा के तैयारी सम्बन्धी प्रश्न के उत्तर में वे बोले—"मण्डली के पूर्वाभ्यास भवन में छह कमरे तथा एक हालनुमा कमरा है। इन छह कमरों में जात्रा के संगीत, डायलॉग, सेटिंग, तकनीकी-व्यवस्था आदि पर अलग-अलग तैयारी होती है और फिर हाल में सभी लोग एकत्र हो जाते हैं और इस प्रकार एक सप्ताह की अवधि में नयी जात्रा तैयार हो जाती है। प्रतिदिन दस-बारह घंटे लोग श्रम करते हैं और इसी स्थान पर भोजन आदि की व्यवस्था रहती है।

अपनी भावी योजना के सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि विदेशों के निमन्त्रण हमारी मण्डली को मिल रहे हैं। अगले वर्ष में "जय संतोषी माँ" तथा महान निर्देशक श्री सत्यजित रे के एक आलेख पर जात्रा तैयार करूंगा जिसमें निर्देशन मेरा तथा सत्यजित दोनों का होगा।

● लक्ष्मण गंज, लखनऊ-226004

'रंगकर्मी' : रंग-चेतना की अभिनव स्मारिका

कल्चरल सोसायटी ऑफ राजस्थान द्वारा १४ वें भारतीय भाषायी नाट्य समारोह के उपलक्ष में एक स्मारिका का प्रकाशन न केवल रूप-रंग साज-सज्जा की दृष्टि से आकर्षक है, अपितु संग्रहणीय भी है। इस स्मारिका में कुछ ऐसी ज्ञान-वर्द्धक सामग्री है, जो समग्र हिन्दी रंगमंच को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होती है।

स्मारिका का पहला आकर्षण १०६ नाट्य-लेखकों के पते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में नाट्य-लेखकों का ऐसा विराट संगम पहले कभी नज़र नही आया। यदि भाषावार वर्गीकरण होता, तो उत्तम होता। अमृतराय ने भी "चिन्दियों की एक झालर", "हम लोग उर्फ यहीं कहीं होगा" आदि की रचना की है, उन्हें, अगले प्रकाशन में अवश्य जोड़ा जाना चाहिए।

स्मारिका का दूसरा आकर्षण १४१ रंग-संस्थाओं के पते हैं। सभी नाट्य-केन्द्रों की सक्रिय रंग-संस्थाओं का ऐसा स्नेह सम्मिलन अद्वितीय है। इन्हें यदि राज्य-वार वर्गीकृत किया गया होता, तो रंग फलक में विविध रंगों के दर्शन हो सकते थे।

स्मारिका का तीसरा आकर्षण है—२१ नाट्य पत्र-पत्रिकाओं का संगम, यद्यपि इनमें से अधिकांश अनियमित और अनियतकालीन हैं। यहाँ उन पत्रिकाओं के पते भी दिए जा सकते थे, जिनमें कि नाटक के स्थायी स्तम्भ हैं। इस बार स्मारिका का "रंगकर्मी" नामकरण एवं नियमित वार्षिक प्रकाशन की घोषणा, स्वागत-योग्य कदम है।

श्री जगदीश प्रकाश द्वारा उड़िया, असमिया, डोगरी, उर्दू एवं कन्नड़ भाषाओं के रंगमंच को जयपुर में सक्रिय करने की संस्तुति की गई है। श्री आर०डी० मंत्री ने कल्चरल सोसायटी आफ राजस्थान की अपनी उपलब्धिओं का विवरण प्रस्तुत किया है। श्रीमती हेमा राजन ने भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता के दर्शन कराये हैं। सर्वश्री अशोक कुमार 'अंचल' और श्रीकृष्ण शर्मा ने हिन्दी नाट्य की

स्थिति-परिस्थिति का अच्छा विश्लेषण किया है। डॉ० प्रभुनारायण 'सहृदय'; नाट्याचार्य ने राजस्थान के लोकनाट्यों पर एक प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है।

श्री अरुण कुमार चौधरी ने जयपुर में महाविद्यालयी रंग-चेतना का एक अच्छा इतिवृत्त प्रस्तुत किया है। 'रंगकर्मी' के आवरण-पृष्ठ पर गुजराती नाट्य-निदेशिका वीणा देसाई एक भावपूर्ण मुद्रा में हैं। सम्पादन किया है 'शब्द-संसार' के अध्यक्ष श्री श्रीकृष्ण शर्मा ने एवं मुद्रक हैं पापुलर प्रिन्टर्स। नाट्य-संवर्द्धन के लिये १९८०-८१ हेतु कल्चरल सोसायटी ने सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन, नाट्य-लेखन प्रत्येक पर २५०) का पुरस्कार तथा सर्वश्रेष्ठ प्रथम, द्वितीय अभिनय के लिए २००) और १५०) रुपये के पुरस्कारों का निर्णय लिया है।

—श्रीकृष्ण शर्मा, जयपुर

उत्तर प्रदेश शासन के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रसारित विशेष लेख

राज्य शासन श्रमिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध

राज्य सरकार मजदूरों की आर्थिक दशा में सुधार करने, उन्हें उनका हक दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। सत्ता की बागडोर सँभालते ही सरकार ने इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार किया और श्रम कल्याण की एक महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये।

सेवायोजकों और कर्मचारियों के मध्य मधुर औद्योगिक सम्बन्ध बनाये रखने के लिए वर्तमान सरकार ने उद्योग में श्रमिकों की भागीदारी की एक नयी योजना का शुभारम्भ १४ नवम्बर, १९८० से किया, जिसके अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र की २०० से अधिक कर्मचारियों वाली उत्पादनरत इकाइयों में शॉप काउन्सिलों और ज्वायन्ट काउन्सिलों के अतिरिक्त प्रबन्धक मण्डल के स्तर पर भी श्रमिकों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है।

प्रदेश में स्वच्छकारों की हित सुरक्षा पर शासन ने क्रान्तिकारी कदम उठाया है। उनके हितार्थ एक १३ सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गई है जिसके अन्तर्गत स्थाई निकायों की निधि पर सफाई मजदूरों के वेतन और भुगतान प्रथम चार्ज होंगे, स्थानीय निकायों/नगर महापालिकाओं द्वारा समस्त कूड़ और मैले को एकत्र कर उससे कम्पोस्ट बनाकर बेचा तथा उससे प्राप्त आमदनी का कम से कम एक चौथायी भाग सफाई कर्मचारियों के लिए स्थापित कल्याण कोष में जमा किया जायेगा, जिसका उपभोग उनकी आवासीय और अन्य सुविधाओं पर होगा। वर्ष १९८०-८१ में सफाई पेशे में लगे हुए पूर्व दशम शिक्षा के लिए ४.६८ लाख रुपये तथा उत्तर दशम कक्षाओं के लिए १.३२ लाख रुपये का प्राविधान किया गया है। सफाई कर्मचारियों के बच्चों द्वारा इन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए कोई आयु सीमा नहीं रखी गई है। सफाई कर्मचारियों को राज्य कर्मचारियों के समान पेंशन, छठी योजना में दुर्बल वर्गों की आवासीय योजना के अन्तर्गत ५० प्रतिशत आवास सफाई कर्मचारियों को देने, गृह-निर्माण हेतु अग्रिम देने में उदारता, उनके लिए सामूहिक जीवन बीमा योजना लागू करने, स्थानीय निकायों के चुनाव में उनका व्यक्ति न जीतने पर उनके एक प्रतिनिधि का मनोनयन आदि। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लिये गये अन्य निर्णय हैं।

राज्य शासन द्वारा विगत ६ सितम्बर, १९८० को आहूत इन्जीनियरिंग उद्योग के तृतीय सम्मेलन के फलस्वरूप ५० या उससे अधिक श्रमिक नियोजित करने

वाली अभियंत्रण उद्योग की इकाइयों के श्रमिकों के वेतन में ४१.२५ रुपये प्रतिमास की वृद्धि तथा अक्टूबर १९८० से आधार वर्ष १९६० = १०० के ३८१ अंकों के ऊपर एक रुपया प्रति अंक परिवर्तनीय महँगाई भत्ता दिया गया। इसी प्रकार चीनी उद्योग के श्रमिकों को पहली जनवरी १९८१ से उनके वेतन तथा महँगाई भत्ते में ५१.५० रु० प्रतिमास की वृद्धि की गई। इस वृद्धि के फलस्वरूप चीनी उद्योग में अकुशल श्रमिक की न्यूनतम परिलब्धियाँ, जो ३१ दिसम्बर, १९८० को ४२५.१० रुपये थी बढ़कर ४७६.६० रुपये प्रतिमास हो गईं। इससे चीनी उद्योग में लगे लगभग एक लाख श्रमिक लाभान्वित हुए।

न्यूनतम मजदूरी अधिनियम १९४८ के अन्तर्गत बीड़ी बनाने, सिल्क की साड़ियों की बुनाई और ज़री का कार्य करने, कपड़ा धोने के या प्रसाधन के साबुन या सिलिकेट और साबुन के चूर्ण बनाने, कृषि कार्य, खांडसारी उद्योग, लोक मोटर परिवहन तथा कम्बल बनाने के उद्योग में लगे श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी का पुनरीक्षण विगत एक वर्ष की अवधि में किया गया है। यह निर्णय भी लिया गया है कि इस अधिनियम के अन्तर्गत आने वाले जिन उद्योगों में न्यूनतम मजदूरी की दरें १९७७ या उससे पूर्व से पुनरीक्षित नहीं की गई थीं उनके शीघ्र पुनरीक्षण की कार्यवाही की जायेगी।

औद्योगिक शान्ति की दृष्टि से वर्ष १९८० पिछले पाँच वर्षों में सबसे अच्छा वर्ष रहा जिसमें पिछले पाँच वर्षों की तुलना में हड़तालों और ताला-बन्दियों के फलस्वरूप सबसे कम मानव—दिवसों की हानि हुई। मोदीनगर, एलगिन मिल, इन्टर नेशनल टुबैको कम्पनी, जी० ई० सी०, नैनी आदि में चल रहे औद्योगिक विवादों के समाधान की दिशा में शासन द्वारा उद्योग-पतियों के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाने के कारण उन्हें सुलझाया जा सका। वर्ष १९८० में श्रम विभाग के प्रयास से इस प्रकार ६६ प्रतिशत हड़ताल की नोटिसों के मामले समझौते से निपटा लिए गये।

समाचार पत्रों के पत्रकार तथा गैर-पत्रकार कर्मचारियों के लिए पालेकर एवार्ड के संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा लिये गये निर्णयों को कार्यान्वित कराने के लिए विगत १६ जनवरी को एक द्वितीय सम्मेलन के बाद २० जनवरी को शासन द्वारा एक संकल्प जारी किया गया कि यदि किसी श्रमजीवी पत्रकार या गैर-पत्रकार कर्मचारी, जिसे १५ फरवरी, १९८० को पिछले बारह महीने में २४० दिन पूरे हो चुके हैं, की सेवायें अनुशासनिक कार्यवाही के अतिरिक्त समाप्त की गई हैं, तो उसे दैनिक समाचार पत्र के प्रबन्धकों द्वारा १ मार्च १९८१ तक काम पर ले लिया जाये। एवार्ड लागू करने हेतु श्रम-सचिव की अध्यक्षता में गठित कार्यान्वयन तथा अनुश्रवण समिति सक्रिय है।

डा० अज्ञात द्वारा संपादित

रंगभारती

के

आगा हश्र विशेषांक

नवम्बर, 1979 परिचयांक

दिसम्बर, 1979 व्यक्ति

जनवरी, 1980 कृति

रुपये बारह पैसे पचास मात्र मनीआर्डर द्वारा भेजकर तीनों अंक रजिस्टर्ड बुकपोस्ट द्वारा प्राप्त करें।

केवल सीमित प्रतियाँ ही शेष हैं, अतः अपना क्रयादेश शीघ्र भेजें।

पुस्तकालयों के लिए अब पक्की जिल्द में उपलब्ध

'रंगभारती' की पुरानी फ़ाइलें

प्रथम खण्ड—अगस्त, 1973 से फरवरी, 1975 तक प्रकाशित सभी अंक; डवल क्राउन आकार; पृष्ठ संख्या 325 [इस खण्ड की कुछ ही प्रतियाँ उपलब्ध हैं]

द्वितीय खण्ड—जुलाई, 1977 से जून, 1979 तक (हिन्दी रंगमंच 1977 विशेषांक सहित); आकार डिमाई; पृष्ठ संख्या 530

तृतीय खण्ड—जुलाई, 1979 से जून, 1980 तक (हिन्दी रंगमंच 1978 तथा आगा हश्र विशेषांकों सहित); डिमाई आकार; पृष्ठ संख्या 462

प्रत्येक खंड का मूल्य 40-00 रु०

रजिस्टर्ड डाक-व्यय 5-00 रु० प्रति खण्ड अतिरिक्त

तीनों खण्डों का सम्मिलित मूल्य मात्र 100-00 रु०

शोध-छात्रों के लिए विशेष छूट

अपने क्रयादेश निम्न पते पर भेजें—

वितरण-व्यवस्थापक

रंगभारती

कोठी साह जी, मिर्जामण्डी, चौक, लखनऊ-226003

रंगभारती

द्वारा आयोजित

कौमी एकता नाट्य-लेखन प्रतियोगिता

में

युवा नाटककारों से कौमी एकता
पर आधारित
नाट्य-रचनाएं आमन्त्रित हैं

सर्वश्रेष्ठ कृति पर 501-00 रुपए

का

माधव शुक्ल पुरस्कार

• विस्तृत जानकारी के लिए चौथे कवर पर देखें

रंगभारती
डाक पंजीकृत संख्या : L.W/NP-95
भारत सरकार के न्यूजपेपर रजिस्ट्रार की रजिस्ट्री संख्या R.N. 25142/73

रंगभारती

द्वारा आयोजित

कौमी एकता नाट्य-प्रतियोगिता

की नियमावली

- सर्वश्रेष्ठ नाट्य-कृति का चयन निर्णायक-मण्डल द्वारा किया जायेगा। मण्डल का निर्णय अन्तिम और मान्य होगा।
- मण्डल द्वारा चुनी हुई सर्वश्रेष्ठ रचना पर 501-00 रु० का नकद पुरस्कार एक विशेष समारोह में नाटककार को प्रदान किया जायेगा।
- पुरस्कृत नाट्य-रचना की घोषणा 'रंगभारती' के जुलाई, 1981 अंक में की जायगी।
- पुरस्कृत रचना को 'रंगभारती' के अक्तूबर, 1981 अंक में बिना किसी अतिरिक्त मान-देय के प्रकाशित किया जायेगा।
- पुरस्कृत रचना को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने का अधिकार 'रंगभारती' द्वारा सुरक्षित रहेगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित होने पर विक्रित पुस्तकों पर लेखक को 10% रायल्टी एवं 10 प्रतियाँ (निःशुल्क) प्रदान की जायेंगी।
- नाट्यालेख की मंचन-अवधि कम-से-कम सवा घंटा होनी चाहिए।
- आलेख प्रत्येक दशा में अप्रकाशित होनी चाहिए।
- आलेख कागज के एक ओर सुस्पष्ट हस्तलिखित अथवा टंकित होना चाहिए।
- आलेख की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। पुरस्कृत न होने की दशा में आलेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापस किया जा सकेगा।
- आलेख रजिस्टर्ड डाक से ही भेजें। खो जाने की दशा में 'रंगभारती' का कोई दायित्व न होगा।
- 'रंगभारती' से सम्बद्ध कोई भी व्यक्ति अथवा उसके परिवार का सदस्य इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगा।
- अपनी अप्रकाशित नाट्य-रचना आप इस पते पर भेजकर प्रतियोगिता में शामिल हो सकते हैं।

डॉ० शरद नागर
अवैतनिक संयोजक
कौमी एकता नाट्य-प्रतियोगिता
'रंगभारती', कोठी साहू जी, मिर्जामण्डी, चौक, लखनऊ-226003

महासचिव, नक्षत्र अन्तर्राष्ट्रीय, चौक, लखनऊ-226003 द्वारा मुद्रित एवं प्रका[शित]
मुद्रक । विद्या-मन्दिर प्रेस, रानीकटरा, लखनऊ—फोन 82663 ।